राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 15.00 संख्या 47
सर्कस
सुपर कमांडो ध्रुव
इस विशेषांक के साथ दो आकर्षक स्टीकर मुफ्त

Vinod Yadav

सुपर कमांडो ध्रुव
सर्कस
कथा एवं चित्र: अनुपम सिन्हा
इंकिंग: विनोद कुमार
सुलेख एवं रंग: सुनील पाण्डेय
संपादक: मनीष गुप्ता
सर्कस – संसार से अलग एक दूसरा संसार। इसी संसार में पैदा हुआ था... सुपर कमांडो ध्रुव!
और इसी संसार में अकेला, सुपर कमांडो ध्रुव –

बदलते समय के साथ-साथ, मनोरंजन के नए-नए साधन, हमारी जिन्दगी में आते जा रहे हैं—
वीडियो गेम
कॉमिक्स
केबिल टी० वी०
और अब नए-नए सुविधाजनक, लुभावने और आकर्षक साधनों के सामने पीछे पड़ते जा रहे हैं, मनोरंजन के परंपरागत साधन, जैसे—
-सर्कस-
एक रहस्यमय लंगड़ा—
Mercury CIRCUS
आप निश्चिन्त रहिए! यह शहर आपके काम की शुरूआत के लिए एकदम उपयुक्त है।

यह तो मैं तुम्हारे मस्तिष्क को पढ़कर पहले ही जान चुका हूं। लेकिन अभी भी एक बड़ी समस्या बाकी है, अप्पा!
मैं 'सर्कस' के इस तंबू से बाहर नहीं निकल सकता!
और मेरा अभियान सफल होने के लिए यह जरूरी है, कि इस सर्कस को देखने इस शहर के प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ-साथ, ज्यादा से ज्यादा लोग आयें।
क्योंकि मेरे प्रभाव का घेरा अभी इस सर्कस की बाउंड्री तक ही सीमित है।
ऐसा ही होगा!
तुम्हारी सांसें चलते रहने के लिए यह जरूरी है, कि ऐसा ही हो।
लेकिन उसी समय - सर्कस का सामान जमाते व्यस्त लोगों के बीच-
यही मौका है। इस वक्त कोई भी इस तरफ ध्यान नहीं दे रहा है।
मैं उस दुष्ट की योजना को कभी कामयाब नहीं होने दूंगा। मैं उससे सीधी लड़ाई में तो कभी जीत नहीं सकता। लेकिन इतना तो जरूर कर सकता हूं...
...कि जानवरों और जनता के विरोध के कारण सर्कस को यह शहर छोड़ने पर मजबूर होना पड़े।
और सर्कस का मालिक अप्पा भूखा मर जाए।

पिंजरा खुलते ही– एक तेज दहाड़ ने पूरे सर्कस के वातावरण को पहले तो गुंजा दिया—
और फिर स्तब्ध कर दिया—
यह क्या? बबर पिंजरे के बाहर कैसे आ गया? यह तो पागल शेर है।
दहाड़ की आवाज अंदर तक आ पहुंची थी—
यह कैसी आवाज थी, अप्पा?
यह तो बबर के दहाड़ने की आवाज थी। और वह सिर्फ तभी दहाड़ता है, जब वह पिंजरे से बाहर निकलता है...
तो रोको उसे, मूर्ख! मैंने मेयर पर अपना प्रभाव डालकर सर्कस को शहर के बीचों-बीच वाले मैदान पर लगवाया है।—
...और वह इसलिए ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इसको देखने आएं। इसलिए नहीं कि एक पागल शेर, शहर में जाकर तबाही मचाए, और हमें यहां से तंबू उखाड़ना पड़े।
मुझे अहसास हो रहा है कि बबर, सर्कस की बाऊंड्री के बाहर निकल चुका है। और मेरी शक्तियां उस बाऊंड्री के बाहर काम नहीं करतीं!
प... पर बबर भी तो तुम्हारे कंट्रोल में था!
उसका दिमाग अभी भी मेरे कंट्रोल में है।
लेकिन अब मैं उसको यहां से बैठा, बैठा, संचालित नहीं कर सकता!
जाओ! रोको उसे!

लेकिन तब तक एक सर्कस का मैदान पार करके बाहर निकल चुका था—
एक पागल शेर, राजनगर में खुला घूम रहा था—
देखो, ध्रुव! यह है मेरे 'मेंटल-मैग्निफायर' का कमाल!
यह एक आम आदमी की मानसिक तरंगों को भी इतना शक्तिशाली कर सकता है, कि वह एक पानी भरा गिलास, मानसिक तरंगों से उठा सके।
कमाल का आविष्कार है। और यह क्या-क्या कर सकता है?
और अगर इसका इस्तेमाल कोई ऐसा व्यक्ति करे, जिसके पास पहले से ही मानसिक शक्तियां हैं तो वह मानसिक तरंगों से पूरी बिल्डिंग उठा सकता है, नदी के पानी का रुख मोड़ सकता है... और पहाड़ तक में सुरंग बना सकता है।
और... हाँ! इससे किसी के दिमाग को वश में भी किया जा सकता है।
किसी के भी?
इस बारे में मेरा प्रयोग अभी अधूरा है। और उसी के लिए मैंने तुमको बुलाया है।
मैं यह देखना चाहता हूँ कि किसी दृढ़ इच्छा-शक्ति वाले व्यक्ति पर इसका क्या असर होता है।
और तुमसे ज्यादा दृढ़ इच्छा-शक्ति वाला व्यक्ति मेरी नजर में नहीं है।

अब मैं तुम्हारे मस्तिष्क को अपने कब्जे में लेने की कोशिश करूंगा, और तुम उसका विरोध करना।
ठीक है, प्रोफेसर वर्मा! मैं तैयार हूं। आप प्रयोग शुरू कीजिये!
प्रोफेसर वर्मा की मानसिक तरंगें 'मेंटल-कोशिका'
से होती हुई ध्रुव के मस्तिष्क को भेदने लगीं—
कुछ हुआ ध्रुव?
नहीं, प्रोफेसर! मुझे तो कुछ महसूस नहीं...
गर्र्र
अरे! यह शेर कहां से आ गया?
ओह! यह जरूर सर्कस से भागा हुआ होगा। यह है शहर के बीच में सर्कस लगाने का परिणाम।
एक गुर्राहट ने ध्रुव को, बात बीच में ही रोकने पर मजबूर कर दिया—
गर्र्र्र्र

वह उन स्कूल के बच्चों पर कूदने जा रहा है। प्रोफेसर, आप अपने मानसिक यंत्र से इस शेर को कंट्रोल करने की कोशिश कीजिए।
मैं कोशिश कर रहा हूं ध्रुव। लेकिन कुछ हो नहीं रहा है। इस शेर के मस्तिष्क पर पहले से ही कोई मानसिक अवरोध लगा हुआ है।
मतलब?
मतलब इस शेर का दिमाग पहले से ही किसी और के कंट्रोल में है।
तब तो मैं ही इसे रोकने की कोशिश करता हूं।
दहाड़.
इधर शेर ने मासूम बच्चों पर छलांग लगाई, और उधर ध्रुव ने खिड़की से शेर की तरफ —
दोनों के शरीर हवा में ही एक-दूसरे से टकराकर —
धड़ंड़ड़.
दूर जा गिरे —

ध्रुव भइया!
अब तो मुझे शेर से डर भी नहीं लग रहा!
ध्रुव भइया, इस शेर को पीटो। यह हमको डरा रहा था।
बच्चो, धीरे-धीरे खिसक कर उस गली में घुस जाओ...
भागना मत।
मैं इस शेर से बात करने की कोशिश करता हूँ।
ग्रोर्रर्र! घुर घुर घुर! गर्र र र...
लेकिन—
अरे! इस पर तो मेरे बहलाने-फुसलाने का कोई असर नहीं हो रहा!
और इसकी गुर्राहट में पागलपन भी झलक रहा है। सर्कस वाले इसको पकड़ने आते ही होंगे।
मेरा काम है इसको तब तक किसी पर हमला करने से रोकना!
सड़क पर ट्रैफिक अपने-आप रुक चुका था—
गर्र्र्र्र्र्र्र!
लेकिन आदत से मजबूर गाड़ी वालों के हाथ, हॉर्न पर दबते ही जा रहे थे—
और शेर बौखला रहा था—

ही पल - सबके चेहरों पर दहशत फैल गई—
साक्षात मौत उनके सामने से दौड़ती हुई, करीब आ रही थी—
ओह! यह तो गाड़ियों की तरफ भाग रहा है। मैं इतनी जल्दी उस तक नहीं पहुंच सकता।
के झरोखे बंद कर पाने तक का समय नहीं मिला,
के कांपते उन हाथों को—
अगर... अगर कोई बीच में आकर, उसकी जिन्दगी की रेखा को और लंबा न कर देता—
ताड़
के जबड़े, उस बदनसीब
खोपड़ी पर कस गए—
एक पल बाद ही, भय से फटी वे आँखें हमेशा के लिए फटी रह जातीं—

आईईईई!

'इंडियन टाइम्स' के ऑफिस
देवता, मैं इस लफंगे को शहर से

ओह!

घबराओ मत! हम लोग
पहुंचाने की कोशिश कर सकता हूं।

या मैं टैक्सी पकड़कर वापस जाऊं ?

काफी बुलन्द थे।
ये आर्डर किसने दिया, पापा?

का इतिहास ले सकता है।

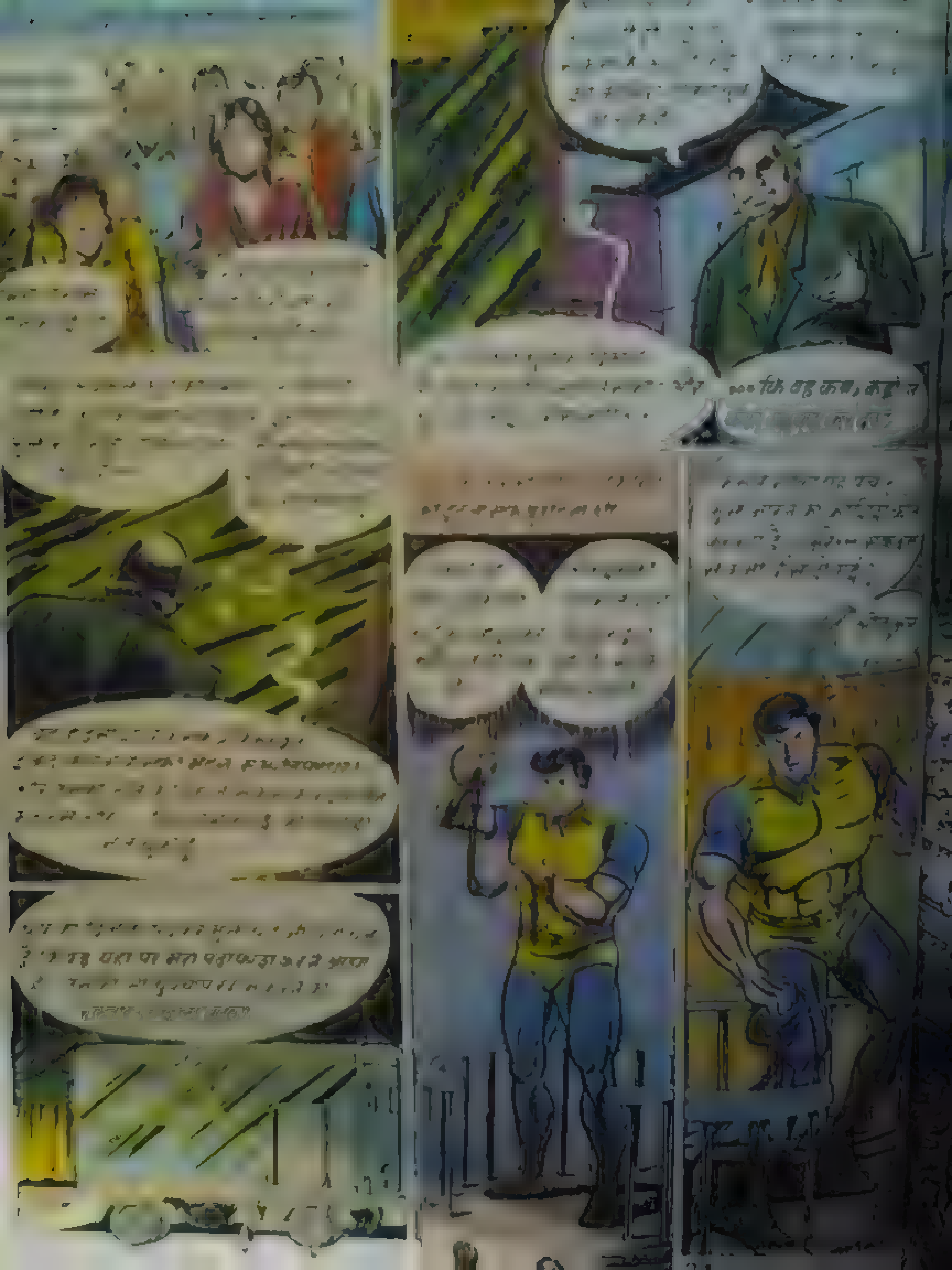

चिंघाड़!

लेकिन तुम यहां पर कैसे

अरे, नूरी, यह तुमको क्या हो रहा है?

जेबो, अटैक!

होने की बात छिपाकर रखी;
मुझे दुबारा खत्म करने की

तो फिर
आपका दुश्मन
कोई और है।

पल-पल का ज्ञान बटोरता रहा।
तब मैंने यह निश्चय किया

गजब। अब स्टार किंग के खत्म होने में कुछ ही मिनटों की देर है।

इसी वक्त - सर्कस के मुख्य द्वार पर—
हैं! कहां गया वह 'मानसिक यंत्र' वाला बोरा!
मैंने तो उसे डिक्की में ही रखा था!
यह मेरे पास है!
माफ करना, भाई लोगो! दरअसल मैंने आपको बिना बताए, आपकी गाड़ी की डिक्की में लिफ्ट लेली थी!
पर रास्ते का बिलकुल पता नहीं चला!
चंडिका!
ये जो आप मानसिक यंत्र उठाकर लाए थे, इसके अन्दर, इसकी 'बुकलेट' भी रखी हुई है। उसमें इसको इस्तेमाल करने का तरीका भी लिखा हुआ है। वही पढ़ते-पढ़ते रास्ता कट गया!
जानते हो ये कैसे चलता है?
ताड़
धाड़
अब ज़रा सर्कस के अन्दर चलकर ध्रुव भइया के हाल-चाल पता किए जाएं।
ध्रुव, 'स्टार फिश' के वारों से बचता फिर रहा था—
परी, तुम्हारे पास भी तो मानसिक शक्तियां हैं। तुम 'स्टार फिश' को रोकने के लिए कुछ करो!
स्टार फिश के सामने मेरी शक्तियां बचकानी हैं, ध्रुव!

आह! मुझे बचाओ! यह तो मेरी हड्डियाँ तोड़ रहा है!
ओफ्फ़! क्या हम रंगाराजन को बचाने के लिए कुछ नहीं कर सकते!
ध्रुव! क्या हो रहा है यहाँ पर?
चंडिका! तुम यहाँ पर कैसे? और तुम्हारे पास यह 'मानसिक यंत्र'? कमाल का संयोग है। अभी हमको इसी की सख्त आवश्यकता थी।
लाओ, इसे मुझको दो!
ध्रुव ने पूरी शेखर को संक्षेप में 'मानसिक यंत्र' की कार्यशैली समझा दी—
इसको पहनकर 'स्टार-फिश' पर वार करो! अब रंगाराजन और हम लोगों को सिर्फ तुम ही बचा सकते हो, पूरी!
क्योंकि तुम्हारे पास पहले से ही मानसिक शक्तियाँ मौजूद हैं।
मैं कोशिश करता हूं, ध्रुव!
पूरी का पहला मानसिक वार लगभग घातक निकला—
'स्टार फिश' तड़पकर रंगाराजन को छोड़ने के लिए मजबूर हो गई—
चि यां यां यां
और उसने अपना ध्यान पूरी शेखर की तरफ लगा दिया—
यह तो वही 'मानसिक यंत्र' लगता है, जो मुझे चाहिए था! इसे मुझे दे दे, पूरी!
वर्ना मैं इसे तेरी लाश पर से उतार लूंगा!

अचानक—
ओह! ध्रुव, इसकी मानसिक शक्तियाँ बहुत तेज़ हैं। मेरे मस्तिष्क के साथ-साथ इस मानसिक यंत्र पर भी ज़ोर पड़ रहा है।
यह ज़्यादा देर तक सही-सलामत नहीं रह सकता।
मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ भाई! यह कार्बन डाई ऑक्साइड वाला फायर एक्सटिंग्विशर!
यह कुछ काम आ सकता है! क्योंकि इससे ठोस कार्बन डाई ऑक्साइड के कण निकलते हैं, जिनको अत्यधिक ठंडा होने के कारण 'ड्राई आइस' भी कहा जाता है।
और 'स्टार फिश' पहले भी हिमखंड में कैद होकर अधमरी सी हो चुकी है। यह बर्फ की ठंडक नहीं सह पाती है।
इसका केन्द्र ही इसकी सबसे कमज़ोर जगह लग रही है। यहीं पर वार करना ठीक रहेगा।
पूरी से 'मानसिक यंत्र' लेने में जुटी स्टार फिश, ध्रुव पर ध्यान नहीं दे रही थी—
और जब तक वह ध्यान दे पाती, तब तक बहुत देर हो चुकी थी—
आर्रर्रईई! ये ठंड! मुझे सुईयाँ सी चुभ रही हैं। मेरा दिमाग सुन्न हो रहा है। आऽऽऽ!

Vinod Yadav